ग्रामीण किशोरियों के लिए किशोरावस्था शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान

नेहा जानी*
लोकेश जैन**

मानव संसाधन विकास की दृष्टि से किशोरावस्था उम्र का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जो जीवन को भावी दिशा देती है। इस उम्र में उलझनें, अनकही व्यथाएँ तथा समझ में न आ सकने वाली स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। कई प्रकार की समस्याएँ किशोरावस्था जीवन की वास्तविक मुश्किलों से परे सुखद कल्पनाओं की उड़ान की सुंदर अनुभूति की स्वाभाविक दशा हैं किंतु वर्तमान वातावरण, दुनियादारी की समझ के अभाव में किशोरियाँ अपनी नासमझी या नादानी में भूलों व समस्याओं के जाल में फँस जाती हैं और कई बार इस मकड़जाल में इस प्रकार उलझती चली जाती हैं कि उनका भावी विकास क्षत-विक्षत होने लगता है। ग्रामीण परिवेश में किशोरियों में इन समस्याओं की गंभीरता अधिक दिखाई देती है। चूँकि भारत गाँवों का देश है, इसलिए राष्ट्रीय मानव संसाधन विकास की दिशा में ग्रामीण किशोरियों की समस्याओं को समझना तथा उसके लोक मंतव्य आधारित उपाय पर शोध करना प्रासंगिक हो जाता है। सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा किशोरावस्था की समस्याओं का समाधान करने हेतु किशोरावस्था शिक्षण के द्वारा बहुआयामी प्रयास किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने भी विद्यालयी पाठ्यक्रम के ज़रिए किशोरावस्था की समस्याओं को समझने तथा उनका समुचित समाधान प्राप्त करने के उद्देश्य से इसे सैद्धांतिक व प्रायोगिक रूप से समावेशित किया है। फिर भी, ग्रामीण विस्तार में जो स्थिति दिखाई देती है, वह संतोषजनक नहीं है। इसी लक्षित वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर किए गए शोध अध्ययन को यह शोध पत्र प्रस्तुत करता है। इस शोध अध्ययन में इन्हीं प्रश्नों का समाधान खोजने तथा इन समस्याओं के मूल कारणों को ज्ञात करने हेतु गुजरात राज्य के गांधीनगर ज़िले के मोतीपुरा गाँव में एक पायलट शोध अध्ययन किया गया, ताकि लोक सम्मत व्यावहारिक समाधानों की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया जा सके।

मानव संसाधन विकास की दृष्टि से मानव जीवन के विकास में किशोरावस्था एक अहम और प्राथमिक पड़ाव है, जहाँ से विकास और भटकाव दोनों का बीजारोपण होता है। यदि किशोरों को सही परिवेश एवं मार्गदर्शन मिले तो उनके जीवन की गाड़ी विकास की पटरी पर चढ़ जाती है और इसके अभाव में दुविधाओं व नासमझ भूलों के भँवर में फँसकर विकास की मंज़िल से कोसों दूर चली जाती है, जिससे वे तनाव और कुंठाग्रस्त हो जाते हैं, जिसके दूरगामी दुष्परिणाम उन्हें शारीरिक एवं मानसिक विकास के क्षेत्र में भुगतने पड़ते हैं।

**शोधार्थी*, ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केंद्र, गुजरात विद्यापीठ, रांधेजा, गांधीनगर 382620
***प्रोफ़ेसर*, ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केंद्र, गुजरात विद्यापीठ, रांधेजा, गांधीनगर 382620

© NCERT not to be republished

किशोरावस्था भावनात्मक, संज्ञानात्मक व संवेगात्मक विकास का वह आरंभिक चरण है, जहाँ व्यक्ति के जीवन में भली-भाँति शारीरिक-मानसिक परिवर्तनों की शुरुआत होने लगती है। किशोरावस्था को मुग्धावस्था भी कहा जाता है, जहाँ उनके साथ शारीरिक-मानसिक रूप से जो कुछ घटित हो रहा है, कौतूहलवश वे उसके पात्र भी हैं और दर्शक भी। इन परिवर्तनों को समझने की किशोरियों की अपनी सीमाएँ हैं, जो सांस्कृतिक, सामाजिक व पारिवारिक परिवेश से निर्मित होती हैं।

किशोर मानव संसाधन अभी अपनी बाल्यावस्था को छोड़कर आगे बढ़ा ही होता है, किंतु परिपक्वता एवं अपूर्ण, आधी-अधूरी जानकारी के कारण न तो शारीरिक परिवर्तनों का समय पर प्रत्युत्तर दे पाता है और न ही मानसिक दुविधाओं से उबर पाता है तथा सभी के बीच रहते हुए भी स्वयं को अकेला सा महसूस करने लगता है। वे सही मार्गदर्शन के अभाव में बहुधा भटक जाता है तथा जाने-अनजाने में गलत रास्ते अख्तियार कर लेता है।

किशोरावस्था शिक्षण— किशोरावस्था की दुविधाओं के हल में एक सकारात्मक पहल

किशोरावस्था शिक्षण को एक सकारात्मक पहल के रूप में प्रतिस्थापित किया जा सकता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने किशोरावस्था शिक्षण को शैक्षणिक पाठ्यक्रम का अंग बनाया है, जो सैद्धांतिक व व्यावहारिक प्रशिक्षण की ज़रूरत को पूर्ण करता है। हमारे नीति नियामक यह मानते हैं कि किशोरावस्था किशोरों के जीवन का एक निर्णायक मोड़ होती है, जहाँ वह स्वयं को, अपने आस-पास के वातावरण को तथा अपने ऊपर पड़ने वाले प्रभावों को समझते हैं। इस पाठ्यक्रम को क्रमबद्ध रूप से संयोजित किया गया है ताकि किशोर या किशोरियाँ ये समझ सकें कि वे स्वयं को कैसे समझ सकते हैं? यह वस्तुतः किशोरों को व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर स्वयं की पहचान, पोषण एवं आरोग्य संबंधी प्रश्नों से जोड़ने की कोशिश करता है, यथा– मुझे 'मैं' कौन बनाता है? के व्यक्तित्व गठन की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया व घटकों को समझाता है। वह इस किशोरावस्था में पहली बार मान्यता, मूल्यों, पसंद-नापसंद में बदलाव, पहचान की आंतरिक अनुभूति तथा व्यावसायिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से रूबरू होता है।

किशोरावस्था शिक्षण किशोरों को एक नूतन अवबोधन से परिचित कराता है, जिसके आधार पर वह शैशव व बाल्यावस्था के बाद आने वाले इन परिवर्तनों, समस्यामूलक घटकों को एक अर्थ प्रदान करता है। यदि यह अवबोधन सही रूप में हो जाए तो समस्याएँ काफ़ी हद तक कम हो सकती हैं।

किशोरावस्था में वह जैविक एवं शारीरिक परिवर्तन, भावनात्मक परिवर्तन, संज्ञानात्मक परिवर्तन, पारिवारिक-सामाजिक-मित्र, वातावरण आदि विविध परिवर्तनों से गुज़रता है। किशोरावस्था के समय उसकी स्वयं की समझ अत्यंत जटिल हो जाती है। स्वयं की पहचान के विकास की दृष्टि से इस अवस्था को नाजुक कहा जाता है, क्योंकि वह पहली बार स्वयं को जानने के लिए इतना चिंतित और उत्सुक होता है। मन में दुविधा और बढ़ती है, जब परिवार के लोग उसे किन्हीं मुद्दों को लेकर बड़ा तथा किन्हीं मुद्दों को लेकर छोटा मानते हैं। यहीं से उसके मानस पटल पर उसकी भूमिका के प्रदर्शन को लेकर उलझनें शुरू

© NCERT not to be republished

होती हैं और वह विरोधाभासी व्यक्तित्व को जीने का प्रयास करने लगता है।

किशोरियों के समुचित विकास के संदर्भ में किशोरावस्था शिक्षा को अधिक अनिवार्य एवं संवेदनशील माना जा सकता है, क्योंकि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में बालिकाओं को एक अलग नज़रिए से देखा जाता है। किशोरियों का भावनात्मक स्तर भी पृथक होता है। किशोरियों में इन परिवर्तनों का स्वरूप स्तनों के आकार में आरंभिक वृद्धि, बगलों व जांघों में बालों का आना तथा मासिक धर्म का आरंभ होना आदि है। संकुचित सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में ग्रामीण किशोरियों के पास इनसे संबंधित दुविधाओं एवं जिज्ञासाओं का समुचित समाधान पाने के बहुत ही मर्यादित विकल्प उपलब्ध होते हैं। उस पर विकट स्थिति यह है कि जो भी सुविधाएँ उपलब्ध हैं उनका लक्षित समूह को ठीक तरह से लाभ नहीं मिल पाता है।

किशोरावस्था की समस्याओं को विवाह, प्यार, शारीरिक आकर्षण आदि सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के साथ जोड़कर देखा जा सकता है। किशोर या किशोरियाँ पुराने विकल्पों के प्रति विद्रोह, नए विकल्पों का सृजन, संबंधों की अपने तरीके से व्याख्या का जतन करते दिखते हैं, जहाँ उन्हें परिवार व समाज के साथ संघर्ष करना पड़ता है। इसीलिए, किशोरावस्था को वह अवधि कहा जाता है, जिसमें मित्रमंडली के सहयोग की स्वीकार्यता बढ़ती है। इसका असर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही हो सकता है। भावनात्मक एवं संवेदनात्मक परिवर्तनों के कारण ये किशोरियाँ तर्कोत्तर व्यवहार पसंद करती हैं।

किशोरियों की शिक्षा एवं जागरूकता हेतु सरकारी प्रयास

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय तथा वैश्विक स्तर पर यू.एन.डी.पी., यूनिसेफ, फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन तथा ऑक्सफ़ॉम जैसी गैर सरकारी अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ कार्यरत हैं। मंत्रालय द्वारा किशोरियों को न्याय दिलाने, अनुचित व्यवहारों के प्रति संरक्षण प्रदान करने हेतु किशोर न्याय अधिनियम, 2000; अनैतिक कार्य अधिनियम, 1956; घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनयम, 2005 जैसे संवैधानिक प्रावधान किए गए हैं। बालिका सुधार गृह, सुरक्षा गृह, विशेष बालगृह, आशियाना बालगृह आदि आवासीय परियोजनाओं के अलावा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय 2 अक्तूबर, 1975 से समेकित बाल विकास परियोजना (आई.सी.डी.एस.) का संचालन कर रहा है। इसमें किशोरावस्था शिक्षा हेतु किशोरी शक्ति योजना भी संचालित की जा रही है। इसका उद्देश्य किशोरावस्था के बच्चों का मानसिक, भावनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक विकास करना तथा आरोग्य की दृष्टि से भावी युवावस्था के लिए तैयार करना है ताकि वे किशोरावस्था के दौरान होने वाले परिवर्तनों को समझ सकें तथा उनका सही प्रतिउत्तर देते हुए अपनी भावी युवावस्था के लिए तैयार हो सकें। किशोरियों के सर्वांगीण विकास हेतु यह योजना विस्तृत रूप से निम्नलिखित उद्देश्यों को समाहित करती है—

- 11–18 वर्ष की किशोरियों को किशोर वय में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी देना तथा उन्हें मानसिक रूप से इसके लिए तैयार करना।

© NCERT not to be republished

- किशोरियों को स्वास्थ्य, व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय स्वच्छता, पोषण, सुरक्षित मातृत्व, किशोरी प्रजनन तथा यौन स्वास्थ्य (ए.आर.एस.एच.), परिवार व बच्चों की देखभाल के संदर्भ में जानकारी देना, उनके स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति में सुधार लाना।
- स्कूल न जाने वाली किशोरियों को अनौपचारिक शिक्षण प्रदान करना तथा उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में लाना।
- किशोरियों को आँगनवाड़ी की सुविधाओं से मुखातिब कराकर जागरूक माता के रूप में निर्माण की भूमिका की आवश्यकता को पूरा करना।
- लघु व्यावसायिक गतिविधियों का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भरता की ओर ले जाना।
- किशोरियों को विविध सार्वजनिक संस्थाओं— पुलिस, डाकघर, बैंक, पंचायत, स्वास्थ्य केंद्र, उचित मूल्य की दुकान आदि की जानकारी देना। किशोरी दिवस का आयोजन करना।
- किशोरियों के समूह गठन करना तथा आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, नर्स आदि के सहयोग से उन्हें सशक्त बनाने हेतु कार्य करना।
- बाल विवाह की रोकथाम करना।

शोध समस्या

भारत की 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या अभी भी गाँवों में निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्र में मानव संसाधन विकास की दृष्टि से महिला मानव संसाधन विकास प्राथमिकता की अग्रिम पंक्ति में आता है। मानव संसाधन विकास के संदर्भ में उम्र के आधार पर संपूर्ण जीवन को बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था के रूप में विभाजित किया जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक चरण में समस्याओं का स्वरूप तथा कारण अलग-अलग होते हैं एवं इसी प्रकार उस अवस्था विशेष में समुचित विकास करने के लिए विशेष प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता होती है। हर अवस्था में ज्ञान, अनुभव तथा समस्याओं का सामना करने की योग्यता अथवा शक्ति का प्रमाण अलग होता है। इस दृष्टि से किशोरावस्था जीवन का सबसे नाज़ुक दौर माना जा सकता है। सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों के मद्देनज़र लड़कियों के संदर्भ में उम्र का यह पायदान और अधिक संवेदनशील हो जाता है।

अवधारणात्मक पहलू पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि किशोरियों का यह वर्ग अपने जीवन में पहली बार बिना किसी अनुभव और पर्याप्त ज्ञान के अपने आस-पास के वातावरण और शारीरिक मानसिक परिवर्तनों से पहली बार मुखातिब होता है तथा मुग्धावस्था के प्रभाव में ऐसे लोगों के बहकावे में आ जाता है, जिनके पास पर्याप्त वैज्ञानिक ज्ञान नहीं होता है। ऐसी परिस्थितियाँ उनके भावी जीवन की स्वाभाविक गति व गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव डालती हैं।

स्वतंत्रता के बाद भी सामाजिक रुढ़िगत मानदंडों, कुरीतियों और बाधाओं के कारण देश के विकास पटल पर आज भी महिलाएँ वंचित और पिछड़ी हुई हैं। लगभग ढाई दशक पहले उनकी सक्रिय भागीदारी के बारे में दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कुछ कदम उठाए गए, इन कदमों से महिला सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है, लेकिन इस शोध के माध्यम से शोधार्थी सभी विद्वानों का ध्यान महिला मानव

© NCERT not to be republished

संसाधन की किशोरावस्था की ओर आकर्षित करना चाहता है, जो महिला विकास की आधारशिला है।

किशोरावस्था शिक्षा के सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रयास महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत संचालित योजनाओं के बावजूद यह वर्ग निरंतर समस्याओं से जूझ रहा है, इसे गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है, इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता है।

किशोरावस्था जीवन का वह शुरुआती मोड़ है, जिस पर अधिकांश किशोरियों को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन का प्रतिउत्तर देने के लिए योग्य मार्गदर्शन नहीं मिल पाता तथा असमंजस, तनाव अवसाद के अकारण ही उनका सारा वजूद घिर जाता है, अपनों के बीच पारस्पिरक विश्वास का पुल नहीं बँध पाता और ऊपर से बाहरी लोग उन्हें स्वार्थवश वस्तुस्थिति का सही साक्षात्कार नहीं करने देते। यहीं से संघर्ष व तनाव की शुरुआत होती है, जो उनके विकास के लिए दुखदायी बन जाती है। एक स्थानीय कहावत है कि यदि जड़ पर ही अंगार रख दी जाए तो वह पौधा कभी वृक्ष का रूप नहीं ले सकता, कभी फल फूल नहीं सकता। एकीकृत बाल विकास परियोजना में किशोरियों के मार्गदर्शन का औपचारिक प्रावधान किया गया है। यह नेटवर्क समग्र भारत में ग्रामीण परिवेश को समाहित करता है तथापि स्थिति संतोषजनक नहीं दिखाई देती है। आज भी किशोरियों में इन परिवर्तनों को लेकर झिझक, असमंजस की स्थिति स्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे में ये समझना व ज्ञात करना ज़रूरी हो जाता है कि यह वर्ग वर्तमान में किन समस्याओं से एवं किन कारणों से, दुविधा से रूबरू हो रहा है तथा इन दुविधाओं का उनके विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? तथा औपचारिक वातावरण के साथ-साथ इस वर्ग की समस्याओं के समुचित समाधान के लिए और क्या संभावित विकल्प हो सकते हैं? यह शोध अध्ययन इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजने की दिशा में एक आरंभिक प्रयास है।

शोध अध्ययन का औचित्य

यह शोध अध्ययन ग्रामीण मानव संसाधन विकास की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। चूँकि किशोरावस्था मानव की स्व के अवबोधन व स्वानुभूति की आरंभिक अवस्था है, जो भावी जीवन की दिशा निर्धारित करती है। यह शोध अध्ययन उन पहलुओं पर प्रकाश डालने में सक्षम होगा, जिनसे ग्रामीण किशोरियों की मानसिकता, मान्यता और सोच को समझा जा सकता है तथा समस्या समाधान हेतु तदनुसार नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे —

- हार्मोनल परिवर्तनों के द्वारा शारीरिक बदलावों को लेकर ग्रामीण किशोरियों में जानकारी का स्तर एवं स्रोत की विश्वसनीयता कैसी है तथा इसके कारण उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है?
- क्या वे किशोरावस्था शिक्षा के सरकारी या गैर सरकारी प्रयासों से परिचित हैं तथा क्या वे इस लक्षित समूह की पहुँच में हैं?
- स्वयं को इन शारीरिक मानसिक बदलावों के अनुकूल ढालने के लिए किन मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है और उसके लिए कौन-से कारक ज़िम्मेदार हैं?

- यह ज्ञात करना कि किशोरावस्था के कारण उनके जीवन में किस तरह के बदलाव आए हैं, किस तरह की कठिनाइयाँ उनके द्वारा महसूस की जा रही हैं, इसमें परिवार के सदस्यों की भूमिका सकारात्मक रही है या नकारात्मक तथा इस स्थिति का (संघर्ष, तनाव, सहकार आदि) का उनके सर्वांगीण विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- लोकमतों के आधार पर यह ज्ञात करना कि इन परिवर्तनों का प्रबंध करने के लिए ग्रामीण परिवेश में किशोरियों का सर्वांगीण विकास करने के लिए क्या करना चाहिए?

उपकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्नलिखित उपकल्पनाएँ थीं —

- ग्रामीण परिवेश में किशोरियों के पास पर्याप्त जानकारी नहीं है।
- जिस स्रोत से उन्हें जानकारी मिलती है वह पूरी तरह से प्रामाणिक नहीं है और वे स्रोत सही जानकारी प्रदान नहीं करते हैं।
- ग्रामीण किशोरियाँ सरकारी प्रयासों से पूर्णत: परिचित नहीं हैं तथा उनका लाभ नहीं ले पा रही हैं।
- किशोरियों में शारीरिक परिवर्तनों के अनुकूल होने की जल्दी है अर्थात् स्वयं को बड़ा महसूस करने की उत्सुकता है।
- भावनात्मक परिवर्तन के अनुकूल ढलने में किशोरियों को परिवार के सदस्यों का आवश्यक विश्वास और सहयोग प्राप्त नहीं होता है।
- किशोरियों को अकसर धोखा, विश्वासघात वहीं से मिलता है, जहाँ से उन्हें भावनात्मक मदद मिलने की अपेक्षा रहती है।
- किशोरियों व परिवार के सदस्यों के मध्य पारस्परिक अविश्वास, भावनात्मक मदद की कमी और बाहरी लोगों के धोखे किशोरियों के भावी जीवन की दशा और दिशा बदल देते हैं।

शोध प्रविधि

इस शोध अध्ययन के लिए गांधीनगर जनपद में साबरमती नदी के किनारे बसे एक छोटे से गाँव मोतीपुरा का चयन किया गया था। जिसकी जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 1,076 है तथा स्त्री-पुरुष लिंगानुपात 52:48 है। गाँव में सामान्य (पटेल) व अनुसूचित जाति (ठाकोर एवं भंगी) के परिवार निवास करते हैं। जहाँ माध्यमिक स्कूल और आँगनवाड़ी है। किशोरावस्था की प्रचलित अवधारणा के अनुरूप प्रतिदर्श का चयन करने के लिए जाति एवं किशोरावस्था के तीनों चरणों (मानकों) को ध्यान में रखते हुए 12–16 वर्ष की उम्र वाली कुल 50 किशोरियों का चयन उपलब्धता तथा उत्तर देने की तैयारी के आधार पर किया गया, जो समष्टि का लगभग 30 प्रतिशत है।

चूँकि अध्ययन प्राथमिक समंक विश्लेषण पर आधारित है, इसलिए समंक संग्रहण हेतु अनुसूची, साक्षात्कार, समूह चर्चा, निरीक्षण आदि का यथायोग्य यथासमय उपयोग किया गया तथा आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सामान्य गणितीय-सांख्यिकी पद्धतियों का उपयोग किया गया।

© NCERT not to be republished

जाति एवं किशोरावस्था के उपचरण के अनुसार समष्टि एवं प्रतिदर्श की स्थिति

जाति	कक्षा 8 और 9 में पढ़ने वाली किशोरियाँ	कक्षा 10 में पढ़ने वाली किशोरियाँ	कक्षा 11 और 12 में पढ़ने वाली किशोरियाँ	कुल समष्टि	प्रतिदर्श (समष्टि का 30%)
पटेल	30	22	26	78	23
ठाकोर	23	15	18	56	17
भंगी	11	11	12	34	10
कुल	**64**	**48**	**56**	**168**	**50**

प्राथमिक समंक विश्लेषण

तालिका 1— किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन की शुरुआत किस उम्र में हुई?

शारीरिक परिवर्तन के समय उम्र (वर्ष में)	आवृत्ति	प्रतिशत
12	22	44
13	19	38
14	9	18
कुल	**50**	**100**

तालिका 1 से स्पष्ट है कि सामान्य रूप से 12 वर्ष की उम्र में शीरीरिक परिवर्तनों की शुरुआत वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक अर्थात् 44 है। संयुक्त रूप से देखें तो 82 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं, जिनमें शारीरिक परिवर्तनों की शुरुआत 12 और 13 वर्ष की उम्र में हुई है। अतः आरंभिक लक्षित समूह के रूप में इस उम्र की किशोरियों पर ध्यान केंद्रित करना श्रेयस्कर होगा।

तालिका 2— शारीरिक परिवर्तनों के कारण किसी प्रकार की शारीरिक-मानसिक दुविधा का सामना करना पड़ा?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	38	76
नहीं	12	24
कुल	**50**	**100**

तालिका 2 के अनुसार अधिकतम उत्तरदाताओं अर्थात् 76 प्रतिशत का कहना है कि उन्हें इन शारीरिक परिवर्तनों के कारण अनकही, अबूझ उलझनों व मानसिक दुविधाओं का सामना करना पड़ा। माना जा सकता है कि इस उम्र में किशोरियों को इन परिवर्तनों के बारे में सही जानकारी की आवश्यकता होती है।

तालिका 3— यदि हाँ तो किस तरह की दुविधा मन में थी?

दुविधा का स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
ऐसा बदलाव क्यों हो रहा है?	12	31.57
किन-किन अंगों में बदलाव होता होगा?	16	42.10
लड़कियों में ही क्यों परिवर्तन होते हैं?	6	15.78
इन शारीरिक परिवर्तनों से भविष्य में क्या होगा और कैसे होगा?	4	10.52
कुल	**38**	**100**

तालिका 3 दर्शाती है कि शारीरिक परिवर्तनों के कारण किशोरियों के मन में उत्पन्न होने वाली दुविधाओं में सर्वाधिक यह प्रश्न परेशान करता है कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? इसका क्या परिणाम होगा? यदि इस स्वाभाविक स्थिति से वे सही रूप से परिचित हो जाएँ तो उसे वे आनंद में परिवर्तित कर सकती हैं तथा अनावश्यक चिंताओं के जाल से बाहर निकल सकती हैं।

© NCERT not to be republished

तालिका 4 — क्या उत्तरदाताओं को शारीरिक दुविधाओं से संबंधित जानकारी के संदर्भ में सूचना स्रोत उपलब्ध थे?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	42	84
नहीं	8	16
कुल	**50**	**100**

तालिका 5— यदि हाँ, तो वे आरंभिक सूचना स्रोत क्या थे?

सूचना स्रोत	आवृत्ति	प्रतिशत
माता	0	0
दादी	3	7.14
चाची	9	21.42
बुआ	4	9.52
मामी	6	14.28
आँगनवाड़ी वाली बहनजी	4	9.52
शिक्षिका	5	11.90
पड़ोस में रहने वाली काकी	2	4.76
आरोग्य कार्यकर्ता	9	21.42
कुल	**42**	**100**

तालिका 6 — अपनी सहेली के साथ इन दुविधाओं से संबंधित सूचना का आदान-प्रदान करती हैं?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	24	48
नहीं	26	52
कुल	**50**	**100**

तालिका 7—यदि हाँ, तो क्या जानकारी प्राप्त हुई?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
इस स्थिति में घर से दूर रहना पड़ता है।	1	4.7
परिवर्तन से घबराना नहीं, घर के सदस्यों से बात करो।	12	50
शरीर में परिवर्तन आए, यह स्वाभाविक है।	4	33.3
सैनेटरी पैड संबंधी जानकारी मिली।	6	25
बुआ और दीदी के साथ बात करना।	1	4.7
कुल	**24**	**100**

तालिका 4 और 5 से स्पष्ट है कि परिवर्तनों का प्रत्युत्तर प्राप्त करने हेतु अधिकांश उत्तदाताओं के पास सूचना के स्रोत उपलब्ध थे, किंतु तालिका 5 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि किशोरियाँ माता के अलावा घर, परिवार तथा नज़दीक के रिश्तेदारों से अपनी इन दुविधाओं को बाँटती हैं। संगठित संस्थागत स्रोतों की स्थिति देखें तो ज्ञात होता है कि ग्रामीण विस्तार में आरोग्य कार्यकर्ता सबसे अधिक विश्वसनीय स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है, तत्पश्चात् शिक्षिका एवं आँगनवाड़ी कार्यकर्ता आते हैं।

तालिका 6 व 7 से स्पष्ट है कि 50 प्रतिशत से भी कम ग्रामीण किशोरियाँ ऐसी हैं, जो अपनी दुविधाओं को अपनी सहेलियों के साथ बाँटती हैं। स्पष्ट है कि शर्म व हिचकिचाहट का वातावरण अभी है, जिसे किशोरावस्था की शिक्षा के माध्यम से दूर किया जा सकता है। तालिका 6 से स्पष्ट है कि जो जानकारी उन्हें मिली है वह विस्तृत एवं पर्याप्त नहीं है। हाँ, सैनेटरी पैड संबंधी जानकारी उन्हें वर्तमान परिवर्तित परिवेश के साथ अवश्य जोड़ देती है।

तालिका 8 से स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता स्कूल में इस विषय से सही रूप से प्रचलित नहीं हो पाए हैं। अभी भी ऐसा माहौल है कि किशोरियाँ सबके सामने पूँछने की इच्छा व साहस नहीं जुटा पाती हैं। इस वातावरण में सुधार लाने के लिए समन्वित प्रयास करने होंगे।

© NCERT not to be republished

तालिका 8 — क्या तुमने किशोरावस्था शिक्षा के बारे में स्कूल में कुछ पढ़ा-सुना या जाना है?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	6	12
सुना तो है, पर ध्यान से नहीं	12	24
सुना, पर समझ में नहीं आया।	4	8
सबके सामने जानने की हिम्मत नहीं हुई।	6	12
नहीं	22	44
कुल	**50**	**100**

तालिका 9 — क्या किशोरियों को आँगनवाड़ी से किशोरावस्था शिक्षा के बारे में कुछ मदद मिल सकी है?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	4	8
नहीं	12	24
आँगनवाड़ी वाली बहनजी आती तो हैं, लेकिन इन परिवर्तनों को लेकर खुलकर बात नहीं करती हैं।	34	68
कुल	**50**	**100**

तालिका 9 से स्पष्ट है कि अधिकांश किशोरियों को आँगनवाड़ी वाली बहन से किशोरावस्था शिक्षा को लेकर आत्मीय मदद नहीं मिलती है। किशोरी दिवस पर इकट्ठा होना, पोस्टर व रीडिंग मैटेरिल पाने तक सिमटा है। इस पर खुलकर चर्चा नहीं होती।

तालिका 10 से स्पष्ट होता है कि लगभग आधे उत्तरदाता आरोग्य कार्यकर्ता की भूमिका को लेकर

तालिका 10 — क्या आरोग्य संबंधी शिक्षण को लेकर किशोरियों को नर्स से कुछ मदद मिलती है?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	24	48
नहीं	26	52
कुल	**50**	**100**

सकारात्मक भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जब भी हमें दवा आदि को लेकर उनके पास जाना होता है तब उन्हें जातीय समस्याओं से संबंधित सीख मिल जाती है, लेकिन नकारात्मक उत्तरदाताओं की स्थिति देखते हुए ज्ञात हुआ कि नियमित रूप से पूर्ण संवेदना व अपनेपन के साथ कार्यक्रमों को इन लक्षित समूह के उत्तरदाताओं तक नहीं ले जाया जा रहा है।

तालिका 11 से स्पष्ट है कि उम्र के इस पड़ाव में अधिकांश किशोरियों को मोबाइल पर लव सांग सुनना, डांस मौज-मस्ती करना, युवा साहित्य को छिपाकर पढ़ना, विजातीय दोस्ती तथा दोस्तों के साथ घूमना-फिरना पसंद आता है।

तालिका 12 से स्पष्ट है कि इस उम्र में किशोरियों को बड़ों की शंका, दखलंदाज़ी, रोक-टोक बिलकुल पंसद नहीं आती है। ज़रा-ज़रा सी बात मन पर लेने की स्वाभाविक वृत्ति बन जाती है। वे अंजाम की परवाह किए बिना बड़ों के समकक्ष व्यवहार करना चाहते हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं को नागवार लगा कि जब उनके अभिभावक परिवार की इज़्ज़त की दुहाई देकर उनका दिल तोड़ने का छद्म प्रयास करते हैं।

तालिका 13 — तनाव अथवा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न न हो इसके लिए निम्नलिखित सुझावों को उत्तरदाता कितने अंक देना चाहते हैं? (बिलकुल योग्य न हो तो 0, एकदम बराबर हो तो 4, ठीक-ठीक लगता हो तो 2, ठीक-ठीक से कम लगता हो तो 1, ठीक-ठीक से कुछ बेहतर लगता हो तो 3)

तालिका 14 दर्शाती है कि इस परिस्थिति से उबरने के लिए क्या व्यावहारिक प्रयास उपेक्षित हैं, के संदर्भ में उत्तरदाता कहते हैं कि किशोरावस्था की शिक्षा उन तक सही रूप से सही समय पर शिक्षिका,

© NCERT not to be republished

तालिका 11 — उम्र के इस पड़ाव पर आपको क्या करना अच्छा लगता है?

प्रवृत्ति	पसंदगी का स्तर				
	बिलकुल अच्छा नहीं लगता	*अच्छा नहीं लगता*	*ठीक-ठीक लगता है*	*अच्छा लगता है*	*बहुत अच्छा लगता है*
फ़ैशन करना	0	2 (4%)	12 (24%)	20 (40%)	16 (32%)
स्वयं के शारीरिक विकास का प्रदर्शन करना	15 (30%)	6 (12%)	12 (24%)	14 (28%)	3 (6%)
विजातीय के साथ दोस्ती करना	3 (6%)	0	9 (18%)	21 (42%)	17 (34%)
दोस्तों के साथ बाहर घूमना	2 (4%)	5 (10%)	7 (14%)	22 (44%)	14 (28%)
बड़ों से स्वतंत्र रूप से प्रेम करना	1 (2%)	4 (8%)	15 (30%)	20 (40%)	10 (20%)
घरवालों की दखलंदाज़ी से दूर अपनी कल्पनाओं में मस्त रहना	1 (2%)	0	11 (22%)	19 (38%)	19 (38%)
प्यार का मीठा अहसास कराने वाले गीतों पर मस्ती से डांस करना	9 (18%)	0	11 (22%)	14 (28%)	16 (32%)
मोबाइल पर लव सांग सुनना	4 (8%)	6 (12%)	15 (30%)	25 (50%)	0
ऐसा साहित्य छिपाकर पढ़ना जो युवा पढ़ते हैं	7 (14%)	3 (6%)	6 (12%)	22 (44%)	12 (24%)
मोबाइल पर दोस्तों के साथ चैटिंग करना	5 (10%)	10 (20%)	1 (2%)	19 (38%)	15 (30%)
घर पर बहाना करके दोस्तों के साथ बाहर जाकर समय बिताना	6 (12%)	6 (12%)	13 (26%)	15 (30%)	10 (20%)
दोस्त के साथ खुली छूट के साथ मौज-मस्ती करना	3 (6%)	4 (8%)	8 (16%)	17 (34%)	18 (36%)
स्कूल में पढ़ने की बजाय दोस्त के खयालों में रहना	3 (6%)	4 (8%)	4 (8%)	17 (34%)	22 (44%)

© NCERT not to be republished

तालिका 12 — इस उम्र में तुम्हें क्या करना अच्छा नहीं लगता?

पसंद न आने वाली प्रवृत्ति	पसंद न आने का स्तर				
	बिलकुल नहीं	*अच्छा नहीं*	*ठीक-ठीक*	*अच्छा*	*बहुत अच्छा*
बड़ों का प्रत्येक शारीरिक या निजी वृति को शंका की नज़र से देखना	26 (52%)	20 (40%)	0	4 (8%)	0
तुम्हें छूट देकर छिपा नियंत्रण रखना, जासूसी करना या कराना	12 (24%)	35 (70%)	0	3 (6%)	0
तुम्हारा मनभेद लेकर किसी भी तरीके से दोस्तों का साथ छुड़वाना अथवा उसमें अवरोध उत्पन्न करना	30 (60%)	17 (34%)	0	3 (6%)	0
हमेशा तुम्हारी दोस्ती, दोस्त और दोस्तों के साथ, उनके साथ बातचीत को खराब नज़र से देखना	15 (30%)	29 (58%)	0	6 (12%)	0
आपके हिसाब से बाहर आने-जाने और बातचीत करने पर रोक-टोक करना और ताने कसना	26 (52%)	18 (36%)	0	6 (12%)	0
अब तुम बड़ी हो गई हो, ऐसा मत करो, वैसा मत करो आदि सलाह चाहे जब देते रहना	20 (40%)	20 (40%)	0	10 (20%)	0
तुम्हारे प्रेम में पड़ने से किस प्रकार घर की आबरू इज़्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी इसको लेकर भावनाओं को समझने के बजाय तर्क-कुतर्क करना	17 (34%)	28 (58%)	0	5 (10%)	0
बड़ों के द्वारा सामाजिक कायदा-कानून व प्रथाओं का भय दिखाना तथा दबाव बनाना	16 (32%)	28 (54%)	0	6 (12%)	0
तुम्हारे इस कदम का घर-परिवार के अन्य छोटे सदस्यों तथा भावी सामाजिक संबंधों पर खराब प्रभाव पड़ेगा, इन तर्कों के द्वारा डराना व धमकाना	20 (40%)	24 (48%)	0	6 (12%)	0
दोस्तों के साथ वाले कार्यक्रम को अटकाने के लिए उसी समय कोई काम बता देना और सच्चा-झूठा बहाना करके वहाँ से दूर कर देना	22 (44%)	25 (50%)	0	3 (6%)	0

© NCERT not to be republished

तालिका 13— तनाव अथवा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न न होने की दशा में उत्तरदाताओं के सुझाव

सुझाव	उत्तरदाताओं द्वारा दिया गया गुणभार				
	0	**1**	**2**	**3**	**4**
हार्मोन्सजनित शारीरिक बदलाव के संदर्भ में वैज्ञानिक जानकारी परिवार के सदस्य एवं शिक्षिकाओं के द्वारा दी जानी चाहिए। बेटी के साथ परिवार के सदस्यों को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए इसका शिक्षण कुटुंब और समाज को मिलना चाहिए।	2 (4%)	4 (8%)	7 (14%)	18 (36%)	19 (38%)
शंकाशील व्यवहार के स्थान पर खुले मन से स्वाभाविक शारीरिक-भावनात्मक परिवर्तनजनित व्यवहार को स्वीकारना चाहिए।	4(8%)	5 (10%)	6 (12%)	21 (42%)	14 (28%)
कुटुंब के पारस्परिक विश्वास के नाते की प्रगाढ़ता बाहरी दगाबाजी और अविश्वास के सामने रक्षण प्रदान कर सकती है।	5 (10%)	0	10 (20%)	20 (40%)	15 (30%)
प्यार और दोस्ती को हमेशा गलत नज़रों से नहीं देखना चाहिए, क्योंकि सभी को प्यार करने का हक है, ऐसा समझना चाहिए।	4 (8%)	1 (2%)	14 (28%)	15 (30%)	16 (32%)
बड़ों को अनावश्यक व अनुचित दबाव नहीं बनाना चाहिए।	4 (8%)	1 (2%)	17 (34%)	12 (24%)	16 (32%)
घर के सदस्यों को हम पर बाहर के लोगों अथवा रिश्तेदारों से अधिक विश्वास करना चाहिए।	1 (2%)	1 (2%)	13 (26%)	16 (32%)	19 (38%)
हमारा भेद जानकर हमारे साथ दगा करने की बजाय सहायता करनी चाहिए तथा बाहरी दगाबाजी से हमारा रक्षण करने हेतु सहायता करनी चाहिए। इससे हमारे प्रति समाज के व्यवहार, मनोवृत्ति और मूल्यों में बदलाव आएगा तथा कोई भी व्यक्ति हमारा नाजायज़ फ़ायदा उठाने से पहले एक बार अवश्य सोचेगा।	6(12%)	0	14 (28%)	16 (32%)	14 (28%)
हमें भी परिवार के साथ सहकार की ज़रूरत है ताकि हम भी अपनी नज़र से इस नई दुनिया को देख सकें। यह मानवीय हक हमें मिलना ही चाहिए।	3 (6%)	7 (14%)	17 (34%)	13 (26%)	10 (20%)
संघर्ष नहीं, किंतु सलाह-मार्गदर्शन, अहं का टकराव नहीं, अपितु प्रेमपूर्ण व्यवहार और यथोचित सहकार ही किशोरावस्था के स्वाभाविक परिवर्तनों को समझने में तथा उसका योग्य संरक्षित प्रत्युत्तर देने में मददगार हो सकता है और विकास की राह को सुगम और बाधारहित बना सकता है।	2 (4%)	1 (2%)	11 (22%)	12 (24%)	24 (48%)

© NCERT not to be republished

आरोग्य कार्यकर्ता आदि के द्वारा नियमित रूप से पहुँचे तथा आने वाली समस्याओं पर चर्चा हो। कुछ उत्तरदाताओं का मानना है कि इस अवस्था के तनाव व संघर्ष से बचने के लिए घर परिवार का भावनात्मक सहकार तथा उनके प्रति सकारात्मक सोच अनिवार्य है, ताकि पारस्परिक विश्वास की कड़ी मज़बूत हो। एक मानव होने के नाते उन्हें अपने तरीके से जीने का अधिकार मिले। वे स्वयं को समझें तथा समझ के साथ अपने व्यवहार को नियोजित कर सकें। इस दिशा में शैक्षिक प्रयास अहम भूमिका निभा सकते हैं।

तालिका 14 से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं का मानना है कि सरकारी कार्यक्रमों से जुड़े जो लोग हैं, वे अपनी नैतिक ज़िम्मेदारी के साथ, लगाव व अपनेपन के साथ किशोरावस्था के प्रभावों के संदर्भ में सही रूप से मार्गदर्शन एवं सहयोग का आश्वासन प्रदान कर सकें तो स्थिति काफ़ी हद तक बदल सकती है तथा सामाजिक परिवेश को भी परिवर्तित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं —

1. किशोरियों में अधिकांशतः शारीरिक परिवर्तनों की शुरुआत 12 वर्ष की उम्र से हो जाती है। ये शारीरिक परिवर्तन उनकी दुविधा एवं परेशानी का कारण बनते हैं। समस्या उस समय उनके लिए गंभीर लगने लगती है, जब शर्म की वजह से तथा उसे सही-सही न समझ पाने की वजह से अपनों के सामने नहीं रख पाती हैं।
2. शारीरिक परिवर्तनों को लेकर क्या करना है? इसकी आधी-अधूरी जानकारी जैसे-तैसे उन्हें अपने परिवार के सदस्यों व नज़दीकी रिश्तेदारों

तालिका 14 — उत्तरदाताओं की राय में किशोरावस्था शिक्षा व्यवस्था को असरदार बनाने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
आँगनवाड़ी कार्यकर्ता हमारे साथ सखी मंडल बनाकर एकांत में खुलकर बात करने का अवसर दें तथा किसी के साथ उनकी गोपनीयता उजागर न करें।	34	68
आँगनवाड़ी कार्यकर्ता हमारे साथ-साथ हमारे परिवारजनों को भी इन किशोरावस्था के परिवर्तनों तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाले हमारे स्वाभाविक व्यवहारों के बारे में समझाएँ तथा हमारे साथ संयमित व्यवहार करने की सीख दें, प्यार से हमारी समस्याओं को सुनने व समझने हेतु प्रेरित करें।	26	52
स्कूल में पुरुष अध्यापक इसके बारे में सही तरह से नहीं बता पाते हैं। उनकी नज़र कहीं और रहती है।	20	40
नर्स हमारी सखी बनकर यदि हमें सही मार्गदर्शन दे तो हमें इन परिवर्तनों को वैज्ञानिक रूप से समझने में मदद मिलेगी और हम इन परिवर्तनों का सही प्रत्युत्तर दे पाएँगे।	23	46

नोट — उत्तरदाताओं से एक से अधिक उत्तर प्राप्त हुए हैं।

© NCERT not to be republished

से मिल जाती है, किंतु इसके चलते उनकी इच्छा, भावनाओं में जो उठा-पटक शुरू होती है उसका प्रत्युत्तर उन्हें कहीं से भी नहीं मिल पाता।

3. इन परिवर्तनों के फलस्वरूप उनका जो व्यवहार हो रहा है, उसके परिणामों की समझ किशोरावस्था की आरंभिक स्थिति में तो अधिकांश किशोरियों को नहीं हो पाती है, किंतु उनका ऐसा बदला-बदला व्यवहार क्यों हो रहा है, इसे उनकी नज़र से, भावनात्मक दृष्टिकोण से, किशोरावस्था की अल्हड़ता के नज़रिए से न तो उनके आस-पास के लोग और न ही परिवार व समाज देखना चाहता है। ऐसे में जो उनकी भावनाओं को हवा दे देता है, वही उन्हें अपना लगने लगता है। बहुधा ये अपना लगने वाले बाहरी लोग उनका अनुचित फ़ायदा भी उठा लेते हैं। इनमें ऐसी किशोरियों का प्रतिशत बहुत कम हैं, जो इनके सामने मज़बूती से खड़े होने का साहस कर पाईं हो तथा उन उत्तरदाताओं का भी प्रतिशत काफी कम है, जिन्हें इस तरह के गलत कदम उठ जाने पर घर-परिवार या अपनों का भावनात्मक सहारा या खुला सहकार मिला हो। ऐसे में वे समझौतावादी नज़रिया अपनाकर खुद को परिस्थितियों के हवाले कर देती हैं।
4. अध्ययन में यह ज्ञात हुआ कि किशोरियों के लिए इन बदलावों के संदर्भ में जानने का स्रोत मुख्यतः दादी, चाची, चाचा, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता रहे हैं, किंतु किशोरियाँ अपनी दुविधाएँ इनके साथ खुले मन से नहीं बाँट पाती हैं।
5. किशोरावस्था शिक्षा से जुड़े विविध सरकारी प्रयास वर्तमान में व्यावहारिक पटल पर संवेदना की दृष्टि से इन किशोरियों की पहुँच से दूर बने हुए हैं।
6. शोध अध्ययन से पता चला है कि अधिकांश किशोरियाँ शुरुआत में अपने बड़ों के साथ अपने बदलावों को बताने, मन में आ रही मुश्किलों को साझा करने अथवा उनके साथ इस विषय पर संवाद करने के बजाय "वे क्या करते हैं?", इससे सीखते हैं अथवा सामान्यत: या उसे ही अपना लेते हैं।
7. बहुधा इन किशोरियों की सहेलियाँ आपस में घबराने या अनजाने भय से बचने के लिए स्वयं को तैयार करती हैं, परिवर्तनों को भी बाँटती हैं तथा बड़ों के द्वारा उनके तत्संबंधी वार्तालाप के ज़रिए इसके आगे जानने का प्रयास करती हैं।
8. स्वाभाविक तौर पर अधिकांश किशोरियों को अपने शारीरिक परिवर्तनों का प्रदर्शन करना अच्छा लगता है। यही वजह है कि वे शीघ्रातिशीघ्र इन शारीरिक परिवर्तनों के अनुकूल होने की उत्सुकता को प्रकट व प्रदर्शित कर देती हैं।
9. अधिकांश उत्तरदाताओं को उनके बड़ों की किसी भी प्रकार की दखलंदाज़ी एवं दोस्तों के साथ न मिलने में डाली जा रही अनचाही बाधाएँ, बहानेबाज़ी अथवा अन्य किसी प्रकार की कृत्रिमता पसंद नहीं आती।
10. किशोरावस्था में विजातीय आकर्षण की तरफ किशोरियों का रुझान बढ़ता है और वे आगे-पीछे का कुछ भी विचार किए बिना अपनी ही धुन में निश्चिंतता के साथ आगे बढ़ते जाने की मानसिकता बना लेती हैं तथा इसके लिए छद्म व प्रकट रूप से परिवार के सामने आने

© NCERT not to be republished

एवं विरोध का रास्ता अपनाती हैं। इसीलिए, मानसिक तनाव या आंतरिक अवसाद से ग्रसित होने वाली किशोरियों का प्रतिशत बढ़ा है। लगभग 20 प्रतिशत किशोरियाँ समय के साथ अपनी पुरानी गलतियों को भूलकर जीवन में आगे बढ़ जाने में ही अपना भला समझती हैं।

11. उत्तरदाताओं की दृष्टि में उनके परिवार द्वारा उनके दोस्तों के साथ प्रत्येक व्यवहार को शंका की दृष्टि से देखा जाता है। उनके राज़ का पर्दाफाश करने के लिए उन्हें एक तरफ तो छूट दी जाती है ताकि वे कोई गलती करें, जिससे उनकी भावी योजना को जानकर उनकी भावनाओं को सुनियोजित तरीके से येन-केन प्रकारेण दबाया जा सके, किंतु किशोरियों को बड़ों या परिजनों का यह दोहरा चरित्र रास नहीं आता और वे विद्रोह पर उतर आती हैं।
12. ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली किशोरियों के पास इन परिवर्तनों को लेकर न सिर्फ़ पूर्ण जानकारी की कमी है, अपितु ऐसा वातावरण भी दिखाई नहीं देता जहाँ वे अपने मन की बात अपनों से कर सकें। संभवतः वे अपनी समस्या को सही रूप से परिभाषित करने में समर्थ नहीं दिखाई देती। जिन स्रोतों से उन्हें जानकारी प्राप्त होती है उन्हें वैज्ञानिकता की कसौटी पर विश्वसनीय नहीं माना जा सकता है, क्योंकि सुनी-सुनाई बातें ही ऐसे वातावरण में आगे बढ़ती जाती हैं और मानसिक-भावनात्मक समस्याओं का तनाव ज्यों का त्यों बना रहता है।
13. शोध अध्ययन में यह पाया गया कि अधिकांश किशोरियों में शारीरिक परिवर्तनों के अनुकूल होने की शीघ्रता अथवा उत्सुकता दिखाई देती है, किंतु वे यह अनुकूलन सहजता से नहीं बिठा पाती हैं। उन्हें कई अनबूझे प्रश्नों के भ्रम जाल से गुज़रना होता है। ऊपर से परिवार के लोगों का वास्तविक सहयोग नहीं मिल पाता है।
14. किशोरियाँ बताती हैं कि किशोरावस्था की उम्र में आते ही उन पर तरह-तरह के बंधन एवं रोक-टोक शुरू हो जाती है, जबकि हम उम्र भाइयों पर कोई अंकुश नहीं होता। हम भी इनसान हैं, हमारी भी समान भावनाएँ हैं, इस दुनिया को अपनी तरह से देखने की, किंतु हमारी इस भावना को जाने किस डर से परिवार-समाज समझकर भी समझना नहीं चाहता है।
15. किशोरावस्था पर कुछ (27 प्रतिशत) किशोरियों ने छेड़-छाड़ को लेकर शोषण का अनुभव किया है, जिसे पहचान गुप्त रखने की शर्त पर बहुत ही विश्वास के बाद बताया, किंतु इसके पीछे परिवार के सदस्यों का रूढ़िगत रवैया तथा इज़्ज़त की दुहाई ज़िम्मेदार है, जहाँ सब कुछ हो जाने पर भी उसे प्रकट करने में वे अपनी भलाई देखती हैं। उन्होंने बताया कि घटनाओं को बताने पर तो मुश्किल बढ़ती है, लेकिन कोई सहानुभूति नहीं मिलती है।
16. भावनात्मक सहारा खोजने की दिशा में अधिकांश किशोरियों को संतोषजनक परिणाम नहीं मिल सके तथा वे उम्र का स्वाभाविक अनुभव पाने की दिशा में इस अनुभव को एकदम खराब या गलत नहीं मानतीं और कहती हैं कि हम भी बड़ों की तरह इसे भी सीख लेंगे।
17. किशोरियों की इस तरह की भावनात्मक भूल सामने आने पर उनका आगे पढ़ना-लिखना

© NCERT not to be republished

बंद हो गया। ऐसा 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उनकी भूल प्रकट ही नहीं हुई तथा शेष ने स्वयं को परिस्थितियों के भरोसे छोड़कर कोई अन्य प्रयत्न नहीं किया तथा स्वाभाविक रूप से जीवनयापन करती रहीं।

उपसंहार

स्त्रियों से दुनिया चलती है, इसीलिए इसे जगत जननी, अन्नपूर्णा, शक्ति स्वरूपा आदि संज्ञाओं से विभूषित किया जाता है। बच्ची से स्त्री होने की शुरुआत किशोरावस्था से होती है, इसलिए, इस अवस्था का महिला विकास की संपूर्ण जीवन प्रक्रिया में अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह अवस्था उनके सर्वांगीण विकास की आधारशिला है, इसलिए, इसकी वर्तमान दशा-दिशा तथा उसके भावी परिणामों पर गंभीर चिंतन स्वयं किशोरियों के विकास की दृष्टि से, परिवार-समाज और राष्ट्र की बुनियाद को मज़बूत बनाने की दृष्टि से अनिवार्य है इसे समय परिस्थिति या भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता, न ही रूढ़ियों और परंपराओं के नाम पर इन्हें अलग-अलग तरीके से प्रताड़ित करके अपने अहं की तुष्टि की जा सकती है और न ही इस अवस्था को तुच्छ मानकर उपेक्षित रखा जा सकता है। इस अवस्था में उत्पन्न कुंठाओं का प्रभाव किशोरियों के भावी विकास की बुनियाद को हिला देता है। यदि हमें सुंदर राष्ट्र की तसवीर का मज़बूत खाका तैयार करना है तो इस किशोरी मानव संसाधन व इनकी समस्याओं के समाधान पर सुव्यवस्थित रूप से ध्यान देना होगा। उनमें लोक जाग्रति के द्वारा विश्वास पैदा करना होगा, उम्मीदों को जगाए रखना होगा ताकि वे सपनों को साकार करने का साहस हिम्मत अपने में बनाए रख सकें। अनावश्यक रूप से तनाव व संघर्षों की शिकार बनकर अपनी सकारात्मक ऊर्जा व्यय न करें।

किशोरावस्था की समस्याओं के समाधान हेतु किशोरावस्था शिक्षा से जुड़े सरकारी तंत्र, परिवार, समाज, शिक्षण जगत सभी को समन्वित रूप से योग्य संवेदनशील चिंतन व चिंता के साथ इस दिशा में गंभीर प्रयास करने होंगे। इस मानव संसाधन को समुचित मार्गदर्शन प्रदान करना होगा, उत्साह को बनाए रखना होगा, छद्म जासूसी, छिपा अंकुश और दोहरा चरित्र नहीं अपितु पारदर्शिता और विश्वास के नीर से इनकी जड़ों का सिंचन कर उनके आस-पास के पारिवारिक-सामाजिक तंत्र में पुनः नवीन ऊर्जा व विश्वास का संचार करना होगा। इस दिशा में निम्नलिखित सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं—

- ग्रामीण क्षेत्रों में किशोरियों को स्कूल एवं आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा उचित स्पर्श (गुडटच), और अनुचित स्पर्श (बैडटच) का स्वरूप एवं परिणामों से चार्ट अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा जागरूक कराना चाहिए ताकि उनमें भावानात्मक वेग में अपने अच्छे-बुरे की समझ पैदा हो सके।
- किशोरियों का विश्वास हासिल कर उनके साथ दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए, इसमें माता और बड़ी बहन की भूमिका अधिक कारगर सिद्ध हो सकती है।
- घर के ज़िम्मेदार सदस्यों को चाहिए कि वे उनकी भावनाओं को समझें, छोटा समझकर ही उनकी गलतियों को नज़रअंदाज करें, बाहरी धोखों का वे निडरता से सामना कर सकें, इसके लिए उन्हें संपूर्ण सहकार का आश्वासन प्रदान करें, क्योंकि वह आपके ही परिवार का एक

© NCERT not to be republished

सम्मानित सदस्य है यदि अहं, रीति-रिवाजों के भय से उसको कोई क्षति पहुँचती है अथवा उसका कोई अनुचित फ़ायदा उठा लेता है तो एक तरह से आपकी (बड़ों की) अपनी हार है, जिसकी भरपाई किसी अन्य तरीके से संभव नहीं है। इस दृष्टिकोण से उन बच्चियों को कल्पना की उड़ान भरने का, भविष्य की सुंदरता के बाने बुनने का खुला आकाश मिलेगा।

- लोक जाग्रति की विस्तारण पद्धतियों, नाटक, कार्टून तथा सोशल मीडिया के द्वारा उनमें अच्छे-बुरे की समझ पैदा की जा सकती है तथा अभिवावकों को भी किशोरियों एवं उनके किशोरावस्था के स्वाभाविक शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक बदलावों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है तथा किशोरियों को दुविधाओं के जाल से बाहर लाया जा सकता है।
- किशोरियों के प्रति अहं की जगह स्वाभाविक प्रेम एवं भावनात्मक सहयोग तनाव, संघर्ष व शोषण की स्थिति पर लगाम लगाई जा सकती है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि किशोरावस्था की समस्याओं के समाधान की दिशा में परिवार के स्नेहपूर्ण वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। किशोरियों को मासिक स्राव तथा अन्य शारीरिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों व उनकी समस्याओं के बारे में आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के अलावा स्थानीय आरोग्य कार्यकर्ता व महिला शिक्षिका के द्वारा भी जाग्रत किया जा सकता है। यहाँ पर ज़िम्मेदार तंत्र को लक्षित समूह तक पहुँचना है। हालाँकि हिंदी में कहावत तो यह है कि प्यासा कुँए के पास जाता है, परंतु यहाँ पर कुँए को प्यासे के पास आने की आवश्यकता है, क्योंकि लक्षित समूह अबोधता और किशोरावस्था के प्रभाव में अपना भला-बुरा विचारने की स्थिति में नहीं होता है। इससे इस मानव संसाधन को सुदृढ़ बनाने, उसे भावी भूमिका अर्थात् सशक्त महिला मानवशक्ति के रूप में तैयार करने के लिए इस किशोरावस्था शिक्षा रूपी कुँए को प्यासे अर्थात् लक्षित समूह की किशोरियों के पास स्नेह व प्रतिबद्धता के साथ आना पड़ेगा।

संदर्भ

ग्राम पंचायत कार्यालय मोतीपुरा. 2011. ग्राम पंचायत मोतीपुरा के रिकॉर्ड. गांधीनगर, गुजरात.

जानी, नेहा. 2020. *ग्रामीण विस्तार में किशोरियों की प्रमुख समस्याएँ तथा उनके विकास पर प्रभाव* (अप्रकाशित शोध). ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केंद्र, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. *किशोरी शक्ति योजना, 2012–13*. रायपुर, छत्तीसगढ़.

———. 2018. *समेकित बाल विकास परियोजना कार्यक्रम सामग्री,* 2018. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्. प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल शिक्षा, कक्षा 8, 9–10, 11–12 के प्रवेश के आँकड़े (वर्ष 2019–20). रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

———. 2012. *कक्षा 11 की किशोरावस्था पाठ्यक्रम सामग्री (पुनः मुद्रित)*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished